# नजरुल

## की
## हिंदी कविताएँ

संपादक :

**अवधेश प्रधान**

# नजरुल की हिंदी कविताएँ

## संपादक :

## अवधेश प्रधान

*प्रकाशक: नॉटनल*

*प्रकाशन: अगस्त, 2026*

*© अवधेश प्रधान*

# किताब के बारे में

रवीन्द्रनाथ के बाद बांग्ला के सबसे प्रसिद्ध कवि काजी नजरुल इस्लाम ने हिंदी में कविताएँ लिखी हैं- यह किसी आश्चर्य से कम नहीं है। तिरुवांकुर राजा स्वाति तिरुनाल ने हिंदी में भजन लिखे हैं। विनय मोहन शर्मा ने 'हिंदी को मराठी संतों की देन' पर एक पूरी किताब ही लिखी है। बंगाल में भी श्रीरामकृष्ण, स्वामी विवेकानंद और रवीन्द्रनाथ से लेकर सुभाषचंद्र बोस तक एक से एक महापुरुष हुए हैं जो हिंदी जानते-समझते बोलते - बरतते थे। हिंदी भाषी मजदूर व्यापारी और तीर्थयात्री सदियों से बंगाल जाते रहे हैं। इसलिए यह अनुमान तो किया ही जा सकता है कि नजरुल हिंदी जानते रहे होंगे लेकिन इतनी जानते रहे होंगे कि उसमें कविता भी लिख सकें, इसका अनुमान नहीं किया जा सकता। इसीलिए नजरुल की हिंदी कविताओं से गुजरते हुए प्रीतिकर आश्चर्य का अनुभव होता है। बांग्ला के खोजी विद्वान असदुल हक और ब्रह्ममोहन ठाकुर द्वारा संकलित - संपादित नजरुल की जो हिंदी कविताएँ बांग्ला लिपि में होने के कारण हिंदी भाषियों के लिए अज्ञातप्राय थीं उन्हें अवधेश प्रधान ने योग्यता और परिश्रमपूर्वक बांग्ला से हिंदी में रूपांतरित करके हिंदी और बांग्ला के बीच के संबंध को और सुदृढ़ किया है।

इन कविताओं को पढ़ते हुए हिंदी की विलक्षण प्रसार-शक्ति का अनुमान होता है और स्वयं नजरुल की हिंदी में काव्य रचना की या हिंदी में लोकप्रिय होने की या हिंदी भाषियों तक पहुँचने की महत्वाकांक्षा का पता चलता है। इन रचनाओं का अलग स्वरूप है,

अलग रंग है अलग स्वाद है। एक भाषा के महाकवि को दूसरी भाषा में हाथ आजमाते या कभी लड़खड़ाते देखना भी भला लगता है। ये रचनाएँ हमारे देश की बहुकालव्यापी अन्तर्भाषिक और अन्तः सांस्कृतिक आदान प्रदान की परंपरा को और भरा-पूरा बनाती हैं।

नज़रुल के हिंदी गीतों के अनुसंधानकर्ता बांगलादेश के साहित्यिक खोजी विद्वान श्री

**असदुल हक़** को सादर

# भूमिका

सन् 2003 का शरत् काल । ढाका विश्वविद्यालय में भाषाविज्ञान के अध्यापक और साहित्य-संगीत के प्रेमी डॉ. राजीव हुमायूँ भारत यात्रा पर बनारस आए थे। एक दिन काशी हिंदू विश्वविद्यालय के सुरम्य परिसर में सैर करते हुए मिल गए और उनसे परिचय भी हो गया। देखा कि वे काम लायक हिंदी जानते हैं और बांग्ला के अलावा हिंदी के भी लोकसंगीत में रुचि रखते हैं। उनके साथ कुछ दिन का मिलना-जुलना और बात करना मेरे लिए बहुत स्फूर्तिदायक रहा। उन्होंने जून 1995 में प्रकाशित एक पुस्तक पढ़ने को दी- *नज़रुलेर हिंदी गान* ( नज़रुल इंस्टिट्यूट, कविभव, बाड़ी नं. 33 बी, रोड नं. 28, धानमंडी आवासिक इलाका, ढाका से प्रकाशित) । इसका संग्रह और संपादन बांग्लादेश के खोजी विद्वान श्री असदुल हक़ ने किया है। उन्होंने *नज़रुल संगीत अभिधान* (अब्दुस्सत्तार), *नज़रुल गीति अखंड* (अब्दुल अज़ीज़ अल-अमान), *अप्रकाशित नज़रुल* (अब्दुल अज़ीज़ अल-अमान), *अप्रकाशित नज़रुल द्वितीय खंड* (ब्रह्ममोहन ठाकुर) और *नज़रुल संगीत कोश* (ब्रह्ममोहन ठाकुर) जैसी पुस्तकों से सहयोग लिया, नज़रुल के विभिन्न कविता-संग्रहों से सामग्री ली और नज़रुल के घर में सुलभ कवि की कापियों और कागज़ - पत्रों को देखा-परखा, आल इंडिया रेडियो और ग्रामोफ़ोन रेकार्ड कंपनियों की ख़ाक छानी और जगह-जगह बिखरी हुई नज़रुल की हिंदी रचनाओं को बड़े परिश्रम और लगन से एकत्र किया और उनका संपादन करके यह पुस्तक प्रकाशित की।

रवीन्द्रनाथ के बाद बांग्ला के सबसे प्रसिद्ध कवि काज़ी नज़रुल इस्लाम ने हिंदी में कविताएँ लिखी हैं- यह मेरे लिए एक आश्चर्य से कम नहीं था। जिसको भी बताया सबने आश्चर्य प्रकट किया। हिंदी के व्यापक प्रसार के बारे में मुझे कोई भ्रम न था। सुदूर दक्षिण में तिरुवांकुर के राजा स्वाति तिरुनाल ने हिंदी में गीत लिखे हैं, यह जानता था। बंगाल में तो हिंदी बहुत पहले से प्रचलित थी। श्री रामकृष्ण देव हिंदी बोल - समझ लेते थे। स्वामी विवेकानंद ने उत्तराखंड और पंजाब में कई भाषण हिंदी में दिए थे। रवीन्द्रनाथ ने कबीर के पदों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया था। सुभाषचंद्र बोस ने आज़ाद हिंद रेडियो से अपने संदेश हिंदी में प्रसारित किए। मैं इतना तो अनुमान कर सकता था कि नज़रुल हिंदी जानते होंगे लेकिन इतनी जानते होंगे कि उसमें कविता कर सकें- इसका अनुमान न था । इसीलिए नज़रुलेर हिंदी गान मेरे लिए एक प्रीतिकर आश्चर्य था और मेरी प्रबल इच्छा थी कि इसे नागरी हिंदी में प्रकाशित किया जाय क्योंकि बांग्ला लिपि में होने से नज़रुल के कवि-व्यक्तित्व का यह पहलू हिंदी भाषियों को प्रायः अज्ञात है।

नज़रुल 25 मई 1899 को पश्चिम बंगाल में आसनसोल के चुरुलिया गाँव में पैदा हुए। उनके पिता फकीर अहमद काज़ी इमाम थे। 1908 में पिता की मृत्यु के बाद नज़रुल 10 साल की उम्र में गाँव की मस्जिद के मुअज्जिन हुए। घर की परंपरा से इस्लाम की शिक्षा प्राप्त हुई लेकिन अपने चाचा फ़ज़ले करीम के स्थानीय नाट्य दल (लेटोर दल) में शरीक हुए तो तमाम पौराणिक कथाओं का भी अवगाहन किया और 'शकुनि वध', 'युधिष्ठिरेर संग', 'राजपुत्रेर संग', 'अकबर बादशाह', 'कवि कालिदास', 'विद्वान हुतुम' जैसे नाटक लिखे और

खेले। 1910 में नाट्य दल छोड़कर रानीगंज में सीयरसोल हाईस्कूल में भर्ती हुए जहाँ युगांतर समूह के निवारणचंद्र घटक, शैलजानंद मुखोपाध्याय आदि से संपर्क हुआ। आर्थिक कारणों से पढ़ाई छोड़कर आसनसोल में नानबाई की दुकान पर काम करना पड़ा। 1914 में मैमन सिंह जिले के दरीरामपुर (त्रिशाल) में पढ़ाई का सिलसिला एक बार फिर शुरू किया। बांग्ला के अतिरिक्त संस्कृत, अरबी, फ़ारसी के साथ-साथ हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का अध्ययन किया। 1917 में ब्रिटिश आर्मी में भर्ती हुए। 49वीं बंगाली रेजिमेन्ट के अंतर्गत करांची छावनी में पहले कांस्टेबल, फिर हवलदार के पद पर रहते हुए रवीन्द्र, शरत, हाफिज़, रूमी, उमर खय्याम का गहन अध्ययन किया। यहीं पहली बार 1919 में गद्य और कविता में रचना के पहले अंकुर फूटे।

1920 में 49वीं बंगाली पलटन भंग हो गई। वे कलकत्ता में बंगीय मुसलमान साहित्य समिति से जुड़कर साहित्य कर्म में जुट गये। 1920 में बंधन हारा (उपन्यास), 1922 में विद्रोही, प्रलयोल्लास, अग्निवीणा (कविता), व्यथार दान (कहानी), युगवाणी (निबंध संग्रह) का प्रकाशन हुआ। इसके साथ ही वे धूमकेतु (द्विमासिक) का संपादन भी कर रहे थे। उनकी प्रतिभा ऊँचे से ऊँचे उड़ान भर रही थी तभी धूमकेतु (सितंबर 1922 ) में प्रकाशित कविता 'आनंदमयीर आगमनी' के कारण उनकी गिरफ्तारी हुई। 14 अप्रैल 1923 को उन्हें अलीपुर जेल से हुगली जेल में स्थानांतरित किया गया। जेल के ज़ुल्म के ख़िलाफ़ उन्होंने 39 दिनों का अनशन किया। देशबंधु चितरंजन दास, महाकवि रवीन्द्रनाथ से लेकर

क्रांतिकारी युवा छात्र समुदाय तक ने विरोध में आवाज़ उठाई। दिसंबर 1923 में रिहाई हुई। रवीन्द्रनाथ ने अपना नाटक 'वसंत' नज़रुल को समर्पित किया।

वे कम्युनिस्ट नेता मुज़फ़्फ़र अहमद के घनिष्ठ सहयोगी थे। उनके साथ मिलकर 'श्रमिक प्रजा स्वराज दल' का गठन किया। 1925 में लांगल साप्ताहिक पत्र निकाला जिसका उद्देश्य था किसानों और मज़दूरों के संघर्ष को मज़बूत करना। 1929 में 'बंगीय कृषक ओ श्रमिक दल' का सम्मेलन कृष्णनगर में बड़े ज़ोर-शोर से आयोजित किया और उसके प्रत्येक सत्र में उद्बोधन गीत भी गाया। बंगीय कांग्रेस समिति के सम्मेलन में उन्होंने अपना प्रसिद्ध 'कांडारी होशियार' गीत गाया था। वे चुनाव भी लड़े लेकिन हार गए क्योंकि आम मुस्लिम जनता में उन्हें काफिर कहकर प्रचारित किया गया था। 1926 में प्रतिबंधित उनका काव्य संग्रह विषेर बाँशी राजनीतिक सम्मेलनों में खुले-छिपे बिकता रहता था। 1921 में कोमिल्ला में नरगिस ख़ानम से उनकी शादी इतनी नाटकीय परिस्थितियों में हुई कि यह भी कहा जा सकता है कि शादी नहीं हुई। उनकी दूसरी और असली शादी 25 अप्रैल 1924 को कोमिल्ला के एक ब्रह्म समाजी परिवार की कन्या (आशालता सेनगुप्ता) प्रमिला देवी से हुई। 1926 से वे कृष्णनगर में सपरिवार व्यवस्थित जीवन जी रहे थे और राजनीतिक साहित्यिक दोनों मोर्चों पर खूब सक्रिय थे कि 1929 में उनके बेटे बुलबुल की चेचक से मृत्यु हो गई। इस मृत्यु ने कवि को हिला कर रख दिया। 1939 में प्रमिला देवी को पक्षाघात हो गया। 8 अगस्त 1941 को कवीन्द्र रवीन्द्र की मृत्यु से वे विचलित हो उठे। कुछ ही महीनों बाद सहसा उनकी आवाज़ चली गई।

1952 में उन्हें मानसिक चिकित्सालय, राँची में भर्ती किया गया। लंदन और वियना में भी भेजा गया। डॉक्टरों ने उन्हें असाध्य न्यूरो रोग से ग्रस्त बताया। दिसंबर 1953 में उन्हें कलकत्ता वापस लाया गया। 30 जनवरी 1962 को उनकी पत्नी का निधन हो गया। 1960 में उन्हें भारत सरकार ने पद्मभूषण से अलंकृत किया। बांग्लादेश ने 1972 में उन्हें अपने यहाँ ससम्मान आमंत्रित किया, उन्हें बांग्लादेश का राष्ट्रकवि घोषित किया और बांग्लादेश की नागरिकता प्रदान की, 1974 में ढाका विश्वविद्यालय ने डी.लिट्. की उपाधि दी, 1976 में 'एकूशे' पदक प्रदान किया। दोनों देशों ने उन्हें बहुत कुछ दिया लेकिन उनकी आवाज़ और चेतना वापस देना किसी के बस की बात न थी। 29 अगस्त 1976 को कवि का निधन हो गया।

नज़रुल का बचपन आसनसोल के जिस अंचल में बीता वह बिहार के बहुत नज़दीक है। शाह आलम के समय उनके पूर्वज हाजीपुर (पटना) से चलकर चुरुलिया में बस गए थे। गाँव में और लोग भी इसी तरह बाहर से आकर बसे थे। बहुभाषिकता वहाँ के वातावरण में थी। हाट-बाज़ार में बांग्ला और गाँव में उर्दू - हिंदी | नज़रुल ने अपने चाचा से अरबी-फारसी की आरंभिक शिक्षा प्राप्त की थी। 'अमीर हमज़ा', 'शहीदे- कर्बला' और 'जंगनामा' जैसी किताबें पढ़ी जातीं। पिता इमाम काज़ी थे, उनकी मृत्यु के बाद बेटा मुअज्जिन हो गया। इधर चचाजान ग़ज़लें सुनाया करते। नज़रुल बचपन में ही इस प्रकार की धर्म-विषयक ग़ज़लें कहने लगे-

नामाज़ पड़ो मियाँ ओगो नामाज़ पड़ो मियाँ।

सबार साथे जामातेते मस्जिदेते गिया ।।

ताते की पाबे बेसी

पर से हबे खेशी

थाकबे ना को कीना प्रेमे पूर्ण हबे हिया । ।

(ऐ मियाँ, सबके साथ जमात में इकट्ठे मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ो। इससे बहुत नेकी पाओगे, पराये भी अपने हो जाएँगे, ईर्ष्या नहीं रहेगी और हृदय प्रेम से परिपूर्ण हो जाएगा ।)

चाचा फ़ज़्ले करीम एक लेटो गान की पार्टी चलाते थे जिसमें गीत गाने की प्रतियोगिता के साथ-साथ पाला अभिनय भी होता । नज़रुल इस पार्टी में जाने लगे और बहुत जल्दी ही लेटो गान के उस्ताद हो गए। ब्रह्ममोहन ठाकुर के अनुसार, नज़रुल ने उस समय 200 लेटो गीतों की रचना की थी।

कराची छावनी में रहते समय उन्होंने एक पंजाबी मौलवी से फ़ारसी की विधिवत शिक्षा ग्रहण की और फ़ारसी के महान कवियों की रचनाएँ पढ़ डालीं। उनकी बांग्ला में फारसी शब्दों का प्रयोग बढ़ चला।

सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि कराची छावनी में बहुत से हिंदी भाषी जवान भी रहे होंगे और उनके संग साथ में हिंदी की बोलचाल से लेकर गीतों और संवादों की स्वरधारा भी कानों में प्रवेश करती रही होगी और बहुभाषिकता के अभ्यासी उनके मन में उस सबकी प्रतिध्वनियाँ संचित रही होंगी। उस समय की उनकी रचनाओं में इसका प्रमाण

स्पष्ट रूप से लक्षित किया जा सकता है। कराची में उन्होंने एक कहानी लिखी थी- 'हिना'। उसमें सिपाही एक होली गाते हैं-

*आजु तलवार से खेलेंगे होरी।*

*जमा हो गए दुनिया के सिपाई (सिपाही )।*

*ढालों की डंका बादन (बाजन) लागी,*

*तोपों की पिचकारी।*

*गोला बारूद का रंग बनी है, लागी है भारी लड़ाई।*

मुज़फ्फर अहमद का अनुमान था कि शायद इस गीत की रचना सरला देवी या ज्योतिरिन्द्रनाथ ठाकुर ने की होगी। इसी प्रकार कराची प्रवास कालीन एक और कहानी है 'मेहेर - नेगार' जिसमें एक चरवाहा गाता है-

*गोरी धीरे चलो, गागरी छलक नहि जाय-*

*शिरोपरि गागरि, कमर में घड़ा*

*पातलि कमरिया तेरी बलख न जाय*

*आहा टूट न जाय।*

बहुत संभव है, यह गीत उन्होंने अपने किसी हिंदी भाषी सिपाही साथी से सुना हो। बाद में पकी उम्र में इसी तरह का यह गीत लिखा-

*छलके गागरी गोरी धीरे जाओ*

*पलके परान निते बारेक फिरे चाओ।*